ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-1*February- 2018
Innovation The Research Concept

व्यक्तित्व निर्माण में धार्मिक व नैतिक शिक्षा की आवश्यकता

उमाशंकर गुरु
प्राचार्य,
गुरू रामदास कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
दमोह, म0प्र0

जी0पी0 अहिरवार
ऐसोसियेट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
छमोह, म0प्र0

बिप्पू रजक
अतिथि विद्वान,
हिन्दी विभाग,
शासकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय,
छमोह, म0प्र0

सारांश

शिक्षा का अर्थ है व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना।

व्यक्तित्व निर्माण में धार्मिक व नैतिक शिक्षा की महती आवश्यकता है। नैतिक शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से लोग दूसरों में नैतिक मूल्यों का संचार करते हैं। जीवन में अच्छे चरित्र का विशेष महत्व है। दूसरे शब्दों में अच्छे चरित्र से ही मनुष्य की अस्मिता कायम है।

वेदों, उपनिषदों एवं अन्य सभी धर्मग्रंथों में नैतिक अथवा सदाचार शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। भारतीय विद्यालयों में धार्मिक और नैतिक शिक्षा की लम्बी परम्परा होने के कारण यहाँ के निवासी परतंत्र और स्वतन्त्र भारत की धर्मविहीन शिक्षा से रंचमात्र भी संतुष्ट नहीं हुए। अतः उन्होंने अपने स्वयं के प्रयास से ऐसी अनेक शिक्षा संस्थाएँ स्थापित की, जिनमें धार्मिक और नैतिक शिक्षा को उपयुक्त स्थान प्रदान किया गया है।

मुख्य शब्द : नैतिक शिक्षा, धर्म , भारतीय विद्यालय, नैतिक मूल्य, आचरण शिक्षा, धार्मिक ग्रंथ।

प्रस्तावना

नैतिक शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से लोग दूसरों में नैतिक मूल्यों का संचार करते हैं। नैतिक शिक्षा का अर्थ उस शिक्षा से है जो बच्चों में नैतिकता के गुणों का विकास करती है। भारतीय शिक्षा का इतिहास भारतीय समाज के विकास और उसमें होने वाले परिवर्तनों की मुनष्य के जीवन में अच्छे चरित्र का विशेष महत्व है। दूसरे शब्दों में अच्छे चरित्र से ही मनुष्य की अस्मिता कायम है। नैतिकता मनुष्य का वह गुण है जो उसे देवत्त्व के समीप ले जाता है। यदि शुरु में नैतिकता न हो तो पशुता और मनुष्यता में कोई विशेष अन्तर नहीं रह जाता। नैतिकता ही सम्पूर्ण मानवता का श्रृंगार है।

अध्ययन का उद्देश्य

भारत को धर्मो की शरणस्थली कहा जाता है। वर्तमान परिवेश में हम सब भारतीय पाश्चात्य संस्कृति की ओर अग्रसर हो रहे है। शोधपत्र का मूल उद्देश्य व्यक्तित्व निर्माण में धार्मिक व नैतिक शिक्षा की महती आवश्यकता पर जोर देना है।

वेदों, उपनिषदों एवं अन्य सभी धर्म ग्रंथों में नैतिक अथवा सदाचार शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। समस्त ऋषि मुनियों व शास्त्रियों की मान्यता है कि मनुष्य का चरित्र तभी तक है जब तक उसमें नैतिकता व चारित्रिक दृणता है चरित्रविहीन मनुष्य पशु के समान है और एक पशु चाहे कितना ही सुन्दर हो, उसकी आवाज कितनी ही मधुर क्यों न हो, वह एक मानव की ऊँचाईयों को नहीं छू सकता। हमारी संस्कृति में सदैव ही नैतिक मूल्यों की अवधारणा पर विशेष बल दिया गया है।

भारतीय विद्यालयों में धार्मिक और नैतिक शिक्षा की लम्बी परम्परा होने के कारण यहाँ के निवासी परतन्त्र और स्वतन्त्र भारत की धर्म–विहीन शिक्षा से रंचमात्र भी संतुष्ट नहीं हुए। अतः उन्होंने अपने स्वयं के प्रयास से ऐसी अनेक शिक्षा–संस्थाएँ स्थापित की, जिनमें धार्मिक और नैतिक शिक्षा को उपयुक्त स्थान प्रदान किया गया। इतना ही नही, 'हण्टर कमीशन' (1882) से लेकर 'कोठारी कमीशन' (1964) तक नियुक्त किये जाने का समर्थन किया, उदाहरणार्थ–'शिक्षा–आयोग' ने लिखा है–''सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा के लिए सचेत और संगठित प्रयास किये जाने चाहिए।''

भारतीय जनता के विचारानुसार, धार्मिक और नैतिक शिक्षा क्यों आवश्यक है? आयोगों और समितियों ने इस शिक्षा का समर्थन क्यों किया है? इनके कारणों पर प्रकाश डालने से पूर्व शिक्षा, धर्म और नैतिकता के पारस्परिक सम्बन्धों से परिचय प्राप्त कर लेना संगत जान पड़ता है।

शिक्षा व धर्म में सम्बन्ध

शिक्षा और धर्म में स्वाभाविक सम्बन्ध माना जाता है। दोनों के लक्ष्य बहुत कुछ समान हैं। दोनों का सम्बन्ध, व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास से है। दोनों व्यक्ति को उसके वातावरण के सम्पर्क से ही नहीं वरन् उसकी दासता से भी मुक्ति दिलाने का प्रयास करते हैं।

यह स्वीकार किया जाता है कि जिस शिक्षा–प्रणाली का उद्देश्य–व्यक्ति की नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति करना है जो उसको सत्यम् शिवम् एवं सुन्दरम् के अधिक–से–अधिक निकट ले जाने का प्रयास करती है, वह इस कार्य में धर्म की महत्वपूर्ण सहायता की अवहेलना नहीं कर सकता। शिक्षा और धर्म के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों के विचार निम्नांकित हैं–

हीथकोट

''सिद्धांन्त में धर्म और शिक्षा को भले ही एक–दूसरे से अलग कर दिया जाये, पर वास्तव में ऐसा विचार असम्भव है। शिक्षा और धर्म का उद्देश्य और लक्ष्य वास्तव में एक ही है। सच्ची शिक्षा का आधार धर्म है और शिक्षा को धर्म से अलग करने का प्रयास–उसके क्षेत्र, उद्देश्य और लक्ष्य को सीमित करना है।''

स्पेंस रिपोट

''यदि किसी बालक या बालिका को इस तथ्य का ज्ञान नही कराया गया है कि जीवन के बारे में एक धार्मिक दृष्टिकोण भी मौजूद है, तो उसे ठीक तरह से शिक्षित नही कहा जा सकता है।''

धर्म व नैतिकता में सम्बन्ध

धर्म और नैतिकता को एक–दूसरे से पृथक् करना असम्भव है। धर्म का सार–नैतिकता है और नैतिकता का आधार धर्म है। नैतिक मूल्यों का विकास धार्मिक विश्वासों से होता है। व्यक्ति की नैतिक प्रगति, उसके धार्मिक दृष्टिकोण पर निर्भर रहती है। उसको अपने अच्छे कार्य की अच्छे वातावरण की प्रेरणा धर्म से ही प्राप्त होती है।

प्रत्येक समाज में उचित और अनुचित या नैतिक और अनैतिक कार्यों का मापदण्ड उस समाज का धर्म होता है। धर्म से नैतिकता को बल प्राप्त होता है और सम्पूर्ण सभ्यता का आधार धर्म द्वारा नैतिकता को प्रदान की जाने वाली स्वीकृति है। धर्म और नैतिकता के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों के विचार निम्नलिखित है–

रायबर्न–''नैतिकता को धर्म से ही स्वीकृति प्राप्त होती है। नैतिक बल का स्रोत धर्म है। धर्म से सम्बन्धित किये बिना नैतिकता की शिक्षा देना असम्भव धर्म ही नैतिकता में प्राण फूँकता है।''

बारटोल–''कुछ लोग नैतिकता को धर्म से अलग करना चाहते है, पर धर्म के आधार के बिना नैतिकता का अन्त हो जायेगा।''

शिक्षा, धर्म व नैतिकता में सम्बन्ध

उपर्युक्त विवेचन से शिक्षा, धर्म और नैतिकता का सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है। शिक्षा को धर्म से अलग नहीं किया जा सकता है, क्योंकि जैसा कि व्हाइटहेड ने लिखा है–''शिक्षा का सार तत्व यह है कि वह धार्मिक होती है।

जिस प्रकार शिक्षा को धर्म से अलग नहीं किया जा सकता है, उसी प्रकार शिक्षा को नैतिकता से भी पृथक् करना असम्भव है। हरबार्ट का कथन है–''समग्र रूप से नैतिक शिक्षा–शिक्षा से पृथक् नहीं है।''

जहाँ तक धर्म और नैतिकता की बात है, इन दोनों का अस्तित्व एक–दूसरे पर निर्भर है। इसी बात को हम स्प्रिंग के इन शब्दों में कह सकते है–''धर्म के बिना नैतिकता का और नैतिकता के बिना धर्म का अस्तित्व नहीं है।''

इस प्रकार, हम कह सकते है कि शिक्षा, धर्म और नैतिकता एक–दूसरे में इस प्रकार गुँथे हुये हैं कि उनका सम्बन्ध–विच्छेद करना असम्भव है। अतः शिक्षा–धार्मिक भी होनी चाहिए और नैतिक भी। पर क्यों? इसी बात पर विचार करना अब हमारा प्रयोजन है।

धार्मिक व नैतिक शिक्षा की आवश्यकता

सर्वागीण व्यक्तित्व का विकास

विद्यालय पर बालक के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास करने का उत्तरदायित्व है। वह अपने इस उत्तरदायित्व का निर्वाह तभी कर सकता है, जब वह उसे धार्मिक और नैतिक शिक्षा प्रदान करे।

अपने इस कथन की पुष्टि हम रायबर्न के इन शब्दों को उद्धत कर सकते हैं–''यह आवश्यक है कि किसी भी महाविद्यालय में, जो अपने छात्रों के सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास करने का प्रयास करता है, धर्म की शिक्षा दी जानी चाहिए।''

चरित्र का निर्माण

मनुष्य के भाग्य का निर्माण उसका चरित्र करता है। चरित्र ही उसके जीवन में उत्थान और पतन, सफलता और विफलता का सूचक है। अतः यदि हम बालक को सफल व्यक्ति, उत्तम नागरिक और समाज का उपयोगी सदस्य बनाना चाहते हैं, जो उसके चरित्र का निर्माण किया जाना परम आवश्यक है। यह तभी सम्भव है, जब उसके लिए धार्मिक और नैतिक शिक्षा की व्यवस्था की जाये।

'माध्यमिक शिक्षा–आयोग' ने ठीक ही लिखा है–''चरित्र के विकास में धार्मिक और नैतिक शिक्षा महत्वपूर्ण योग देती है।''

उचित मूल्यों का समावेश

पाश्चात्य देशों के समाजों में धार्मिक और नैतिक शिक्षा के अभाव के कारण अनेक गम्भीर दोष उत्पन्न हो गये हैं। अतः वहाँ के अनेक महान विचारकों की धारणा बन गई है कि धार्मिक और नैतिक शिक्षा के द्वारा छात्रों में उचित मूल्यों का समावेश किया जाना अनिवार्य है क्योंकि भारतीय समाज में भी पाश्चात्य समाजों के कतिपय दोष दृष्टिगोचर होने लगे हैं, अतः उनका उन्मूलन करने के लिए पाश्चात्य विचारकों की धारणा के अनुसार यहाँ भी कार्य किया जाना आवश्यक है।

उन्हीं से पथ–प्रदर्शित होकर 'शिक्षा आयोग' ने लिखा है–''हम जिस बात पर बल देना चाहते हैं, वह यह है कि शिक्षा के सब स्तरों पर छात्रों में उचित मूल्यों के समावेश के प्रति ध्यान दिया जाना आवश्यक है।''

अनन्त मूल्यों की प्राप्ति

सत्यम् शिवम् और सुन्दरम्–अनन्त मूल्य समझे जाते हैं। ये सबसे अधिक मूल्यवान वस्तुएँ हैं जो स्वतः अपना अस्तित्व रखती हैं और हमारे आदर एवं निष्ठा की पात्र है। हम केवल धर्म और नैतिकता के माध्यम से ही इन मूल्यों को खोजकर और प्राप्त करके अपने जीवन को पूर्ण बना सकते हैं।

अतः शिक्षा में धर्म और नैतिकता को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना अति आवश्यक है। इसका कारण बताते हुए, रॉस ने लिखा है–''शिक्षा को बालकों के कदम ऐसे मार्ग पर चला देने चाहिए जो सच्चा, ईमानदार, न्याय, दोषहीन, सुन्दर और मंगलमय की ओर ले जाता हो।''

अच्छे गुणों व आदतों का निर्माण

अर्नेस्ट चेव के अनुसार–बालकों को धार्मिक और नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए इसलिए आवश्यक है, क्योंकि वह उनमें अनेक अच्छे गुणों और आदतों का निर्माण करती है, यथा–उत्तरदायित्व की भावना, सत्य की खोज, उत्तम आदर्शों की प्राप्ति, जीवन–दर्शन का निर्माण, आध्यात्मिक मूल्यों की अभिव्यक्ति इत्यादि।

पाठ्यक्रम के दोष का निवारण

'शिक्षा–आयोग' के शब्दों में– ''विद्यालय–पाठ्यक्रम का एक गंभीर दोष है–सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा की व्यवस्था की अनुपस्थिति।''

विद्यालय पाठ्यक्रम के दोष का निवारण करने का एकमात्र उपाय है उसमें धार्मिक और नैतिक शिक्षा को उचित स्थान प्रदान करना।

संस्कृति का पोषण

शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य हमारी राष्ट्रीय संस्कृति का पोषण और आधुनिक आवश्यकताओं के अनुसार उसका पुनर्निर्माण करना है।

सांस्कृतिक विरासत का अंग

धर्म और नैतिकता चिरकाल से भारतीयो की सांस्कृतिक विरासत का अंग रहे है।

ऐतिहासिक तत्व की अवहेलना

ऐतिहासिक तत्व है कि धर्म और नैतिकता का इनका जीवन में अति महत्वपूर्ण स्थान रहा है। उनकी मांग को पूरा न करना इस ऐतिहासिक तत्व की अवहेलना करना है।

सभ्यता की सुरक्षा

यदि हम अपनी सभ्यता को सुरक्षित और विकसित करना चाहते है तो प्रत्येक शिक्षा संस्थान में धार्मिक और नैतिक शिक्षा का उपयुक्त आयोजन किया जाना आवश्यक है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वर्तमान समय में व्यक्तित्व निर्माण में धार्मिक व नैतिक शिक्षा की महती आवश्यकता है क्योंकि जब तक व्यक्ति का सर्वांगीण विकास नही होगा वह अपंग है।

व्यक्ति नैतिक शिक्षा व धार्मिक शिक्षा के आधार पर ही नैतिकता के गुणों का विकास करता है। अतः यह सत्य है कि 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की कल्पना केवल और केवल धार्मिक व नैतिक शिक्षा से ही संभव है। जो हम सभी भारतीयों के लिए आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शिक्षा मनोविज्ञान, डॉ. पी.डी. पाठक, पृ. 8, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, (उ.प्र.)*
2. *नैतिक मूल्य और भाषा, प्रो. शुभा तिवारी, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल*
3. *भारतीय समाज एवं संस्कृति, जे. एस. बघेल कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल*
4. *वही, पृ. 7*
5. *शिक्षा मनोविज्ञान, डॉ. पी.डी. पाठक, पृ. 19, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा (उ.प्र.)*